नज़ीर - काव्य में होली -पर्व

—डॉ0 इशरत खान

नज़ीर अकबराबादी उर्दू के ऐसे निराले शायर हैं जिन्हें उर्दू– साहित्य के किसी विशेष युग में बांधा नहीं जा सकता है। उर्दू में तो उनकी एक अलग पहचान बनी हुई है। एक तरह से नज़ीर जनसाधारण के कवि हैं और उनके मध्य वे लोकप्रिय भी रहे हैं। 'नज़ीर' भारतीय लोकसंस्कृति से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने भारतीय संस्कारों, व्यवसायों, पर्वोत्सवों, विभिन्न प्रकार के मनोरंजनों और भारतीय ऋतुओं की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की है। नज़ीर ने राष्ट्रीय पर्वों और मेले–ठेलों के लोक प्रचलित स्वरूप का ही चित्रण किया है। आध्यात्मिकता से उन्हें कोई सरोकार नहीं। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हिन्द तीज–त्योहारों से वे अच्छी तरह से परिचित नहीं थे।'महादेव का विवाह', 'कृष्ण–जन्मोत्सव', 'नरसी अवतार' तथा 'दुर्गा जी के दर्शन' आदि कविताओं से स्पष्ट होता है कि कवि, हिन्दू–जीवन की ऊपरी सतह से ही परिचित नहीं है अपितु उसकी गहराई तक उतरने का प्रयास भी किया है। हिन्दू त्योहारों के साथ ही मुस्लिम त्योहारों (ईद, शब्बेरात) के लोक प्रचलित रूप ही कवि को ग्राहय हैं। इसी कारण इनके पर्व–वर्णन सहज स्वाभाविक से लगते हैं।

होली भारत का एक लोकप्रिय पर्व है। भारतीय संस्कृति की विशेषता और महानता इस जनपर्व में झलकती है। नज़ीर – काव्य में होली के रंग–बिरंगे रंग–बिखरे हुये दिखाई देते हैं। नज़ीर की दृष्टि में 'होली' का त्योहार 'एकता' का सबसे बड़ा आधार है। एक शायर के रूप में नज़ीर यह जानते थे कि भारतीय संस्कृति को समग्रता में देखना है तो हिन्दू–मुसलमानों के तीज–त्योहारों को एक साथ देखना होगा। उनके पास समन्वित संस्कृति की एक स्पष्ट धारणा थीं जिसके तहत उन्होंने 'शबरात,' 'ईद', 'ईदुलफित्र, 'ईदगाह,' 'अकबराबाद', होली, सामान दीवाली का' और 'राखी' नज़्में लिखी । नज़ीर ने 'होली' वर्णन में विशेष रुचि दिखाई है क्योंकि उनका आगरा एवं ब्रजक्षेत्र से गहरा लगाव था। उन्हें होली इसलिए प्रिय है कि होली के दिन मानव अपने आपसी वैरभाव को भुलाकर गले मिलते हैं और नज़ीर एक–दूसरे को रूठा हुआ देखना नहीं चाहते हैं। क्या खूब कहा है– नज़ीर ने .....

"कि रूठे मिलते हैं आपस में प्यार होली में'। होली के त्यौहार में हिन्दू–मुस्लिम, सभी धर्मों के लोग एक रंग में रंग जाते हैं। नज़ीर के अनुसार कोई

तो रंग छिड़कता है, कोई गाता है जो खाली रहता है वो दर्शक बन कर होली के रंग में डूब जाता है। इस प्रकार सभी धर्मों के लोग मिलकर होली का त्यौहार ज़ोर–शोर से मनाते हैं..... इस सन्दर्भ में एक उदाहरण दृष्टव्य है.....

"नज़ीर' होली का मौसम जो जग में आता है,
कोई तो रंग छिड़कता है कोई गाता है,
जो खाली रहता है वो देखने को जाता है,
जो ऐश चाहो सो मिलता है यार होली में ।।"1

इस त्यौहार की विशेषता, हृदय की उदारता और विशालता है। संसार में कोई अन्य होली जैसा पर्व नहीं है जो इतना खुलकर खेला जाता हो। होली की इसी विशेषता की ओर संकेत करते हुए नज़ीर लिखते हैं.

मची है रंग की कैसी बहार होली में
हवा है ज़ोर – चमन आशकार होली में
अजब है हिन्द की देखी बहार होली में ।।2

प्रकृति का प्रत्येक कण, कवि को होली के रंग में रंगा हुआ प्रतीत होता है। भिन्न–भिन्न रंग के बादल भी आकाश में इधर–उधर घूमते दिखायी देते हैं। बिजली की कड़क ढोलक के समान प्रतीत होती है। साँय–साँय करता हुआ पवन भी होली गाता हुआ, इधर–उधर निकल जाता है। सम्पूर्ण संसार होलीमय हो जाता है। कवि नज़ीर कहते हैं.....

जो घिर के अब्र कभी इस मज़े से आता है,
जो बादलों वो क्या–क्या ही रंग लाता है
खुशी से राद भी ढोलक की गत लगाता है,
हवा को होलियां गा गा क्या नचाता है,
तमाम रंग से पुर है बहार होली में ।।3

ब्रज–संस्कृति के निकट सम्पर्क में रहते हुए उनका मन होली में कुछ ज़्यादा ही रमा है। ब्रज, भगवान कृष्ण की जन्मभूमि है, वहाँ कृष्ण के द्वारा गोपियों के साथ खेली गई होली तो प्रसिद्ध ही है। कवि नज़ीर भी ब्रज की होली से अपरिचित नहीं हैं। उन्होंने दिल्ली, आगरा और ब्रज तीनों स्थानों की होली को देखा था। अतः उनका होली वर्णन प्रत्यक्षदर्शी का वर्णन है। कवि के हृदय में ब्रज की होली अपना प्रभाव जमा चुकी है.... एक उदाहरण इस प्रकार है.....

ये सैर होली की हमने तो ब्रज में देखी।
कहीं न होवेगी मियाँ इस लुत्फ की होली ।।4

ब्रज की होली की यह मुख्य विशेषता है कि इसमें पुरुष, पुरुष ही आपस मे होली नहीं खेलते बल्कि स्त्रियाँ भी पुरूषों के साथ जमकर होली खेलती हैं। यह मनमोहक दृश्य देखते ही बनता है। प्रस्तुत पंक्तियों में कवि नज़ीर, इसी दृष्टि को अंकित करते हैं....

घरों से साँवरी और गोरियां निकल चलियां,
कुसम्बी ओढ़नी और मस्त करती अछपलियाँ।
जिधर को देखें उधर मच रही रंगरलियाँ,
तमाम ब्रज की परियों से भर रही गलियाँ।।5

इस प्रकार की अनूठी होली आज भी ब्रज प्रदेश के बरसाना गाँव में खेली जाती है। पति–पत्नि के होली खेलने का उल्लेख करना भी नज़ीर नहीं भूले हैं । इस सन्दर्भ में एक उदाहरण देखिए .....

जो कुछ कहती है अबला बहुत पिया की मारी,
चली है अपने पिया पास लेके पिचकारी,
गुलाल देख के फिर छाती खोल दी सारी ।।6

नज़ीर–काव्य में प्रेमी–प्रेमिका के होली के रंग देखते़ही बनतेहैं। नज़ीर के काव्य से स्पष्ट होताहै कि उस समय मुसलमान भी होली खेलते थे। मनुष्य होने के नाते, उनकी उठती हुई उमंगे, उन्हें होली खेलने केलिए बाध्य करती थीं। कवि ने भी अपने जीवन में भी जी भरकर होली खेला था। नज़ीर ने अमीरों की होली का वर्णन भी किया है। प्रस्तुत पंक्तियों में होली के इसी रूप को दर्शाया गया है.....

अमीर जितने हैं अपने घर में हैं खुशहाल,
बना के गहरी तरह हौज़ें मिल के सब फिलहाल,
मचाते होलियाँ आपस में वे अबीर–ओ गुलाल।।7

वैसे नज़ीर का धनाढ्य लोगों के होली –वर्णन में मन नहीं रमता। इस समय उनकी लेखनी अवरूद्ध–सी हो जाती है। इसके विपरीत भारत की साधारण जनता की होली का चित्र खींचते समय उनकी लेखनी में शक्ति एवं प्रवाह आ जाता है –

होली की नज़ीर अब तो बहारे हैं अ हा हा।
महबूब रंगीलों की कतारें है अ हा हा ।
'सब' होली है होली है', ही पुकारें हैं अ हा हा ।।8

उसमें दुःख–सुख, हास्य–रूदन, चीत्कार और क्रन्दन, खूबियाँ और

कमज़ोरियां जिस खूबी से नज़ीर ने चित्रित की है वैसा दूसरा कवि नहीं कर सका है। होली के प्रसंग में वाद्ययन्त्रों, वेश्यालयों, मदिरालय एवं शराबियों आदि का भी उल्लेख किया गया है। 'मैख़ाने' में, होली में मदमस्त शराबियों की दशा को रेखांकित करते हुए नज़ीर कहते हैं.....

मैख़ाने में देखो तो अजब सैर है यारो,
वो मस्त पड़े लेटे हैं और करते हैं हो हो,
मस्ती के सिवा, ऐश नहीं, होश किसी को,
शीशों में, प्यालियों में, सुराही में खुशी हो,
उछली है पड़ी बदाए – गुलरंग ज़मी पर ।।9

'नज़ीर' ने दीपावली, होली और रक्षाबन्धन पर विशेष रूप से लिखा है। ये पर्व वर्णन बनावटी नहीं लगते हैं क्योंकि कवि को, स्वयं, इनकी गहरी अनुभूति रही है।

सन्दर्भ :–

1. डॉ0 दामोदर दास वासिष्ठ : कविवर नज़ीर अकबराबादी (हिन्दी काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन) : पृ0 89
2. वही : पृ0 87
3. वही : पृ0 88
4. वही : पृ0 88
5. वही : पृ0 88
6. वही : पृ0 88
7. वही : पृ0 91
8. वही : पृ0 91
9. वही : पृ0 89

डा० इशरत बी० खान
रीडर हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

दीपावली की शुभकामना सहित
अकराबाद फिलिंग स्टेशन
जी. टी. रोड, अकराबाद, अलीगढ़

दीपावली की शुभकामना सहित
जागृति बुक सेन्टर
रामलीला ग्राउण्ड, अलीगढ़ (उ.प्र.)